संस्कृत विषय में पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध–विषय

“डॉ. श्रीनाथ हसूरकर कृत संस्कृत उपन्यासों में इतिहास–बोध एवं वर्तमान समाज को प्रदेय“

2013

निर्देशिका
प्रो. मीरा शर्मा
संस्कृत विभाग
दयालबाग, शिक्षण संस्थान
दयालबाग, आगरा

शोधार्थिनी
दुर्गेश कुमारी
एम.ए.,बी.एड.,
एम.फिल्(संस्कृत)

(अध्ययन का क्षेत्र–साहित्य)

संस्कृत विभाग : कला संकाय,
दयालबाग शिक्षण संस्थान
दयालबाग, आगरा–282005

शोध का उद्देश्य

संस्कृत साहित्य के आधुनिक काल की नवचेतना ने सृजन के क्षेत्र में नूतन हस्ताक्षर किये हैं। गद्य विधा उनमें से एक है। गद्य साहित्य सृजन की वह विधा है जिसमें लेखक का वैदुष्य एक अभिनव शैली को जन्म देकर अपनी अस्मिता को व्यक्त करता है।

आधुनिक काल की संस्कृत सर्जना को इन तीन युगों में विभाजित कर देखा जा सकता है– अप्पाशास्त्री युग (1890–1930), भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री युग (1930–1960), राघवन युग (1960–1980) इन तीनों युगों में संस्कृत गद्य में क्रान्तिकारी विकास हुआ। नई विधाएँ पनपी और नये शिल्प के आयामों में अभूतपूर्व विस्तार हुआ। विषय वस्तु में, कथ्य के परिवेश में अर्थात् भावपक्ष में भी आधुनिक युग का संस्कृत सृजन बहुआयामी है।

आधुनिक युग की विषय वस्तु में न केवल बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है बल्कि विस्तार भी हुआ है। आधुनिक युग का संस्कृत कवि या गद्यकार देवी–देवताओं की स्तुति या उपाख्यान ही नहीं लिखता, अब उनके नायक हैं– राष्ट्रनेता, समाजसेवक या कोई ऐतिहासिक महापुरूष। उसकी विषयवस्तु है– विश्वशान्ति की आवश्यकता, गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का आन्दोलन, सामाजिक विद्रूपताओं पर प्रहार, राजनीति का प्रदूषण, भ्रष्टाचार, विश्वक्षितिज पर हो रही घटनाएँ। सामाजिक सरोकारों पर वह संस्कृत में उपन्यास और कहानियाँ लिख रहा है। आधुनिक युग की विषमताओं पर व्यंग्य और निबंध लिख रहा है। विश्व ऐतिहासिक एवं राजनीतिक घटनाओं का मूल्यांकन कर रहा है। विषयवस्तु की यह नवीनता और कथ्य की परिधि में विस्तार भी आधुनिक युग की विशिष्ट देन है। यही कारण है कि आधुनिक युग का संस्कृत लेखन विशेषतः गद्य लेखन बहुआयामी और विस्तृत फलक वाला हो गया है। इसके साथ ही गद्य की शिल्पात्मक प्रवृत्ति और विधाओं का जो विस्तार हुआ है वह इसे एक विराट् व्यापकता दे देता है। संस्कृत का उपन्यास साहित्य इसी विराट् व्यापकता का महत्त्वपूर्ण अंग है।

संस्कृत उपन्यासों की सर्जना सदियों से होती रही है। सुबन्धु की 'वासवदत्ता', दण्डी का 'दशकुमारचरितम्' और बाणभट्ट की 'कादम्बरी' संस्कृत के उपन्यास साहित्य

की अनुपम उदात्तता के कुछ शिखर है। उपन्यास लेखन की यह गौरवशाली परम्परा पिछली दो सहस्त्राब्दियों से अनवरत चल रही है। सामाजिक दुष्प्रथाओं पर प्रहार करने वाले राजम्मा का 'चन्द्रमौलि' तथा पं० नरसिंहाचार्य का 'सौदामिनी' आदि प्रसिद्ध गद्य रचना है, मेधाव्रत शास्त्री का 'कुमुदिनी चन्द्र' उपन्यास जो वन्यभूमि की घटनाओं पर आधारित होते हुए भी सरल शैली में है। मैसूर के प्रसिद्ध विद्वान जग्गू बकुलभूषण ने 'जयन्तिका' नामक उपन्यास सुललित शैली में लिखा। श्रीनिवासशास्त्री का 'चन्द्रमहीपति' बीसवीं सदी के संस्कृत उपन्यासकार की सभी तरह की प्रवृत्तियों का उदाहरण प्रस्तुत कर देता है किन्तु पं० अम्बिकादत्त व्यास कृत 'शिवराजविजय' शिवाजी की शूरता पर आधारित मध्यकालीन इतिहास को वर्ण्य बनाते हुए लिखा आधुनिक संस्कृत उपन्यासों का प्रवर्तक माना जाता है। इससे प्रेरित होकर अनेक शारदातनयों ने भारतीय इतिहास के युगपुरूषों पर उपन्यास लिखे हैं। भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री ने 'मोगल साम्राज्य सूत्रधारो महाराजो मानसिंहः' ऐतिहासिक उपन्यास लिखा जो अकबर के सेनापति मानसिंह प्रथम (आमेर नरेश) को नायक बनाकर आधुनिक शैली में गूँथा गया संस्कृत उपन्यास है। प्रथित गद्यकार पं. मोहनलाल पाण्डेय ने चित्तौड़ की वीरभूमि में महाराजा रत्नसिंह को विवाहित अनिन्द्य सुन्दरी महारानी पद्मिनी को नायिका बनाकर 'पद्मिनी' उपन्यास की रचना की तथा आसाम के (प्राग्ज्योजिष के) हर्षकालीन राजा भास्कर वर्मा को नायक बनाकर लिखा गया ऐतिहासिक उपन्यास 'अविनाशि' है जिसके लेखक आसाम के सुप्रथित विद्वान विश्वनारायण शास्त्री हैं। इसी श्रृंखला में संस्कृत गद्य के युग पुरूष श्रीनाथ हसूरकर जी ने प्राचीन एवं नवीन शैली के ज्ञान संगम में परिष्कृत दृष्टिकोण को अपनाते हुए उपन्यास शैली का विकास किया। हसूरकर जी ने इतिहास में निहित क्षीण आलोक रेखाओं को उभारा और आज के जीवन की समस्याओं विकृतियों, स्थितियों, पात्रों और मनोभूमियों को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रखकर उन्हें गरिमा दी। इसी प्रकार लेखक ने ऐतिहासिक कथावस्तु में कल्पना प्रसूत प्रसंग को भी अनुस्यूत करते हुए अतीत को जीवन्त करने का श्लाघनीय प्रयास किया है। वस्तुतः इतिहास के तथ्य को कल्पना के रंग में रंगकर वांछित वातावरण प्रस्तुत करना ही ऐतिहासिकता है। तत्कालिक समाज के प्रवाह का वेग दिखाना रचनाकार का लक्ष्य होता है। यह उपन्यास परम्परा वैयक्तिक और समाजगत जीवन की गहन समस्याओं को लेकर चलती है। जिसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष कर्म से जूझने की प्रेरणा

विद्यमान रहती है। ऐतिहासिक उपन्यासकारों ने जहाँ अतीत के गौरवमान और सांस्कृतिक वैभव तथा समृद्धि का अंकन किया वहीं प्रमाणित तथ्यों द्वारा इतिहास का नये रूप में पुनर्मूल्यांकन भी किया है।

'संस्कृतभारतरत्नमाला' नाम से ख्यात ग्रन्थ श्रृंखला के प्रणेता श्रीपाद शास्त्री हसूरकर के सुयोग्य पुत्र श्रीनाथ हसूरकर जी (1924–1988, मध्य प्रदेश) ने इतिहास की प्रसिद्ध घटनाओं पर आश्रित उपन्यासों का प्रणयन किया जिनके नाम हैं–

1. सिन्धुकन्या (लेखक द्वारा नीमच से स्वयं प्रकाशित, 1982)
2. प्रतिज्ञापूतिः (उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ से प्रकाशित,1983)
3. अजातशत्रुः (श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली से प्रकाशित 1984)
4. चेन्नम्मा (मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी की पत्रिका दूर्वा, में धारावाहिक रूप में प्रकाशित 1987–89)
5. दावानलः (उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ से प्रकाशित, 1991)

1. सिन्धुकन्या

'सिन्धुकन्या' उपन्यास की कथावस्तु खिस्त्रोत्तर 13वीं शताब्दी के प्रभावकाल में घटित मुहम्मद बिन कासीम के सिन्धु विजय तथा सिन्धुकन्या देवलदेवी के प्रतिशोध की घटनाओं को लेकर बाईस परिच्छेदों मे गुम्फित की गई है।

डॉ० ईश्वरी प्रसाद का कहना है कि 'सिन्ध पर मुहम्मद बिन कासीम का आक्रमण इतिहास में एक रोमांचकारी घटना है उसका भरपूर यौवन, उसकी वीरता व साहस, अभियान में आदि से अन्त तक उसका उदार व्यवहार एवं उसके करूणाजनक पतन ने उसके समस्त कार्यो को शहीद की उपाधि प्रदान की है।'

(वी.डी. महाजन मध्यकालीन भारत, पृ०सं०13)

इतिहासकार वी.डी. महाजन ने सिन्ध देश का राजा दाहिर को बताया है उसकी दो कन्याएँ सूर्यदेवी और परमल देवी का उल्लेख किया है– 'मुहम्मद बिन कासीम ने दाहिर की दोनों कन्याओं को खलीफा को भेंट किया। खलीफा ने सूर्यदेवी को चुना किन्तु अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए उसने खलीफा से कहा कि मुहम्मद बिन कासीम ने उन्हें यहाँ भेजने से पूर्व उनके सतीत्व को नष्ट कर दिया है। यह सुनकर खलीफा ने क्रोधावेश में मुहम्मद को कच्ची खाल में सिलवाने का आदेश दिया। मुहम्मद के शव को देखने के बाद सूर्यदेवी ने खलीफा को बताया कि मुहम्मद निर्दोष था और प्रतिशोध की भावना से उसने यह मिथ्या आरोप लगाया है।'

(मध्यकालीन भारत, पृ०सं०15)

डॉ. आशीर्वाद लाल श्रीवास्तव की 'भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास' में भी दाहिर की दो पुत्रियों सूर्यदेवी और परमल देवी का पता चलता है जो कि अरबों के हाथ लगीं।'

इतिहासकार एल.पी. शर्मा ने दाहिर की दो पुत्रियों द्वारा मुहम्मद बिन कासीम से बदला लेने की बात कही है। (मध्यकालीन भारत, पृ०सं० 33)

2. प्रतिज्ञापूर्तिः

खिस्त्रपूर्व चौथे दशक में पूर्वी भारत में घटित आर्य चाणक्य के नन्दवंशीय राजा के हाथों अपमानित होने की घटना पर आधारित 'प्रतिज्ञापूर्तिः' बाईस परिच्छेदों में विभक्त उपन्यास है। बाणभट्ट पुरस्कार से सम्मानित 'प्रतिज्ञापूर्ति' उपन्यास का कथासार ऐतिहासिक ग्रन्थ से आधृत है। आचार्य चाणक्य, चन्द्रगुप्त आदि प्राचीन ऐतिहासिक पात्रों से सम्बन्धित प्रसंगों पर आश्रित होकर यह उपन्यास लिखा गया है न केवल इतिहास अपितु बहुत से पुराणों में भी इस ऐतिहासिक वृत्त के मूलभूत पुरुष नन्द, मौर्य वंश के राज्यकाल के प्रसिद्ध वृत्तों का उल्लेख है आचार्य चाणक्य की दो प्रतिज्ञाओं को आधार बनाकर ग्रन्थ का नाम 'प्रतिज्ञापूर्तिः' रखा गया है। प्रथम–यवन शासकों को भारत वर्ष से बाहर निकालने की तथा द्वितीय नन्दवंश के समूल समग्र विनाश की। घनानन्द के विनाश की घटना का वर्णन तो इतिहास में वर्णित है किन्तु मौर्यकाल में किसी प्रकार की

विस्फोटक सामग्री के माध्यम से घनानन्द के विनाश की बात नहीं कही गई है क्योंकि मौर्यकाल में किसी प्रकार की विस्फोटक सामग्री का अविष्कार हुआ नहीं माना जाता है। घनानन्द का विनाश, विस्फोटक द्रव्य के माध्यम से अप्रसिद्ध कल्पना कल्पित घटना प्रसंग है। लेखक ने ऐतिहासिक कथावस्तु में कल्पना प्रसूत प्रसंगों को भी अनुस्यूत किया है।

3. अजातशत्रुः

'अजातशत्रुः' तेईस परिच्छेदों में विभक्त उपन्यास है इसमें 600 ई.पू. सदी में घटित मगधराज विम्बिसार और अजातशत्रु के बीच कलह को वर्णित किया गया है। प्राचीन भारत के इतिहास को देखने पर पता चलता है कि मगध साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक राजा बिम्बिसार था। बिम्बिसार के पश्चात उसका पुत्र अजातशत्रु गद्दी पर बैठा जिसका नाम कुणिक बताया जाता है।

डॉ. डी.आर. भण्डारकर का मत है कि बिम्बिसार प्रारम्भ में लिच्छवियों का सेनापति था जो उस समय मगध में शासन करते थे। (कृष्ण चन्द श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृ०सं०—121)

डॉ. राय चौधरी लिखते हैं— The victory of Bimbisar launched Magadh to that career of conquest and arrandisement which only ended when ashok sheated the sword after the conquest of Kalinga. (पौलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एन्शेन्ट इण्डिया पृ.सं. 117)

4. चेन्नम्मा

'चेन्नम्मा' उपन्यास में ब्रिटिश साम्राज्य के निरन्तर प्रसार के विरोध में रानी चेन्नम्मा द्वारा किऐ गये साहसी प्रतिकार की कथा को आधार बनाया है। कित्टूर चेन्नम्मा विद्रोह 1824—29 के दौरान हुआ। कित्टूर (कर्नाटक) के स्थानीय शासक की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने उसके उत्तराधिकारी को मान्यता नहीं दी। फलस्वरूप दिवंगत राजा की विधवा चेन्नम्मा ने रामप्पा की सहायता से विद्रोह किया।

5. दावानलः

'दावानलः' उपन्यास में सोलह परिच्छेदों में सोमनाथ मन्दिर के ऊपर महमूद गजनवी के आक्रमण तथा वहाँ की स्थिति का सामना करने के लिए राजा जयपाल द्वारा प्रयुक्त प्रभावकारी कदम का वर्णन है इसमें जयपाल उसके पुत्र आनन्दपाल और पौत्र सुखपाल, त्रिलोचनपाल तथा धर्मपाल की वीरता एवं कूटनीति का वर्णन उपलब्ध होता है लेखक ने महमूद की महत्त्वाकांक्षा का वर्णन करते हुए कहा है कि वस्तुतः वह अपनी आकाक्षांओं का दास था। उसकी लोकेषणा तथा वित्तेषणा की कोई सीमा न थी, उसमें पाप–पुण्य का कोई विवेक न था। सिंहासन प्राप्ति के हेतु अपने भाई इस्माइल के साथी से भी छल बल का प्रयोग करने में उसे कोई संकोच नहीं था।

इतिहासकार वी.डी. महाजन ने मध्यकालीन भारत में उसके आक्रमणों तथा सोमनाथ मन्दिर की लूटपाट का वर्णन विस्तार पूर्वक किया है। (मध्यकालीन भारत, पृ०सं०49)

डॉ. आर.सी. मजूमदार के शब्दों में–भारत के इतिहासकारों के लिए महमूद अति लोलुप आक्रमणकारी था। (वी.डी. महाजन, मध्यकालीन भारत पृ०सं०55)

इस प्रकार श्रीनाथ हसूरकर जी के उपन्यासों में ऐतिहासिक दृष्टि से विवेचन करना ही मेरे शोध का मूल उद्देश्य है। वास्तव में ऐतिहासिक अनुसन्धान का मूल उद्देश्य भूत के आधार पर वर्तमान को समझना एवं भविष्य के लिए सतर्क होना है। अधिकांश वस्तुओं का कोई न कोई ऐतिहासिक आधार होता है अतः किसी समस्या, घटना अथवा व्यवहार के समुचित मूल्यांकन के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक है। ऐतिहासिक उपन्यास के लिए तो इतिहास की रक्षा करने के साथ–साथ उसके स्वरूप को अपनी कल्पना के द्वारा स्पष्ट करना भी आवश्यक है अतः ऐतिहासिक अनुसन्धान का मूल उद्देश्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में इन समस्याओं का मूल्यांकन करना है।

श्रीनाथ हसूरकर के उपन्यासों का समाज को क्या प्रदेय रहा है इस पर अगर विचार किया जाये तो कहा जा सकता है कि समसामयिक समस्याओं के निदान एवं समाधान के प्रस्तुतीकरण से उपन्यासों की युगानुकूल जागरुकता का उद्घाटन हुआ है।

वर्तमान समाज में पाठकों को अनेक समस्याओं पर विचार करने के लिए वाध्य किया गया है। "सिन्धुकन्या" व "चेन्नम्मा" उपन्यास जहाँ नारी शक्ति को प्रदर्शित करते हैं वहीं "प्रतिज्ञापूर्ति" व "दावानल" राष्ट्र के प्रति प्रेम को उत्पन्न करते हैं। उपन्यास "अजातशत्रु" में धन प्राप्ति की अत्यधिक लालसा तथा अति महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए पुत्र द्वारा अपने ही माता–पिता को बन्दी बनाने जैसे घृणित कार्य, तत्पश्चात अजातशत्रु के पश्चाताप को दर्शाया गया है। ये उपन्यास सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक आदि उद्देश्यों की पूर्ति करने में सक्षम है। इस प्रकार जहाँ एक ओर जीवन मूल्यों के क्षरण को अभिव्यक्ति दी गई है तो दूसरी ओर भारतीय मूल्यों के रक्षण के लिए भी लेखनी उठाई है।

वर्तमान समाज को अपने गौरवपूर्ण अतीत के साथ–साथ संस्कृत गद्य की सशक्त व सुललित उपन्यास विधा का परिज्ञान हो सके यह अभिलाषा तथा श्रीनाथ हसूरकर जी के ऐतिहासिक पात्रों एवं घटनाओं को लेकर रोचक शैली में लिखे गये उपन्यासों का आकर्षण ही मेरे इस अध्ययन को शोध विषय के रूप में चयन करने की पृष्ठभूमि रही है। साथ ही श्रीनाथ हसूरकर जी के उपन्यासों में ऐतिहासिक तत्त्वों को लेकर कोई भी कार्य मेरी संज्ञान में नहीं आया है। इस विषयोपरान्त कि प्रस्तावित शोध विषय 'श्रीनाथ हसूरकर कृत संस्कृत उपन्यासों में इतिहास–बोध' कतिपय नवीन और मौलिक निष्कर्षों को उद्घाटित कर सकेगा इसे अपने शोध का विषय बनाया है।

मुझे पूर्णतः विश्वास है कि इस शोध विषय पर गुरुजन, विद्वज्जन मेरा उत्साहवर्धन एवं सहयोग कर मेरा मार्ग प्रशस्त करने की कृपा करेगें।

शोधार्थिनी

दुर्गेश कुमारी

"डॉ. श्रीनाथ हसूरकर कृत संस्कृत उपन्यासों में इतिहास–बोध एवं वर्तमान समाज को प्रदेय"

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय– संस्कृत उपन्यासः स्वरूप एवं परम्परा

(क) संस्कृत उपन्यास का स्वरूप–अर्थ, तत्त्व एवं वर्गीकरण

(ख) संस्कृत उपन्यास–परम्परा

(ग) ऐतिहासिक उपन्यास का स्वरूप

(घ) ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा

द्वितीय अध्याय– डॉ. श्रीनाथ हसूरकर का व्यक्तित्व एवं उनका उपन्यास साहित्य : सामान्य परिचय

(क) डॉ. श्रीनाथ हसूरकर का व्यक्तित्व

(ख) डॉ. श्रीनाथ हसूरकर के उपन्यासों का सामान्य परिचय

1. सिन्धुकन्या
2. प्रतिज्ञापूर्तिः
3. अजातशत्रुः
4. चेन्नम्मा
5. दावानलः

तृतीय अध्याय– अध्येय उपन्यासों का इतिवृत्तात्मक ऐतिहासिक विवेचन

(क) ऐतिहासिक घटना प्रधान इतिवृत्त

(ख) कल्पना प्रधान इतिवृत्त

चतुर्थ अध्याय– अध्येय उपन्यासों के पात्र एवं चरित्रगत ऐतिहासिक विवेचन

(क) ऐतिहासिक पात्र

1. पुरुष पात्र 2. स्त्री पात्र

(ख) काल्पनिक पात्र

1. पुरुष पात्र 2. स्त्री पात्र

पंचम अध्याय– **अध्येय उपन्यासों में देशकाल एवं वातावरण के आधार पर तत्कालीन ऐतिहासिक विवेचन**

1. सामाजिक
2. राजनीतिक
3. धार्मिक एवं दार्शनिक
4. आर्थिक
5. सांस्कृतिक

षष्ठ अध्याय–अध्येय उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा–शिल्प एवं संवाद योजना

(क) भाषा सौष्ठव

(ख) शिल्प विधान

(ग) संवाद योजना

सप्तम अध्याय– **ऐतिहासिक उपन्यासों का वर्तमान समाज को प्रदेय**

उपसंहार– **अध्ययन का निष्कर्ष**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अध्येय ग्रन्थ

डॉ. श्रीनाथ हसूरकर कृत उपन्यासों की सूची

उपन्यास का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1. सिन्धुकन्या	लेखक द्वारा नीमच से स्वयं प्रकाशित	1982
2. प्रतिज्ञापूतिः	उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ से प्रकाशित	1983
3. अजातशत्रुः	श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली	1984
4. चेन्नम्मा	मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी की पत्रिका दूर्वा में धारावाहिक रूप में प्रकाशित	1987–89
5. दावानलः	उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ से प्रकाशित	1991

सहायक ग्रन्थों की सूची

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1	आधुनिक शोध प्रणाली	डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्रा	मार्क पब्लिसर्स, जयपुर	2009
2	आधुनिक भारत का इतिहास	बी.एल. ग्रोवर और यशपाल	एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. राम नगर नई दिल्ली	1997
3	आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास	आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय	उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ	वि.स. 2056 (2000ई.)
4	इतिहास की पुनर्व्याख्या	रोमिला थापर, नासिर तैयब जी	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पटना	1991
5	प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यासः इतिहास और कला	डॉ. सुषमा त्यागी	अनुराधा प्रकाशन, मेरठ	1985
6	प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति	कृष्ण चन्द्र श्री वास्तव तथा एम.श्री वास्तव	यूनाइटेड बुक डिपो 21, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद	2010
7	प्राचीन भारत	डॉ. राधा कुमुद मुखर्जी	राजकमल प्रकाशन दिल्ली	1962
8	भारत का इतिहास	इलियट एवं डाउसन	शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी अस्पताल मार्ग आगरा–3	1974
9	भारत में अंग्रेजी राज	सुन्दर लाल	सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार	श्रावण 1882 (जुलाई 1960)
10.	भारत वर्ष और उसका स्वतन्त्रता संग्राम	सुखसम्पतिराय भण्डारी	डिक्सनरी पब्लिशिंग हाउस ब्रह्ममपुरी अजमेर	

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1	भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष	प्रोफेसर विपिन चन्द्र	हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्व विद्यालय	1990
2	मध्य कालीन भारत	एल.पी. शर्मा	लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा	1975
3	मध्यकालीन भारत 1000ई. से 1761 ई. तक	बी.डी. महाजन	एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर नई दिल्ली	1992
14	मुगल साम्राज्य का पतन	सर जदुनाथ सरकार	शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी अस्पताल मार्ग आगरा–3	1974
15	संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डॉ. रामजी उपाध्याय	रामनारायण लाल बेनी माधव प्रकाश्न, इलाहाबाद	1961
16	संस्कृत साहित्य का इतिहास	बलदेव उपाध्याय	शारदा संस्थान, वाराणसी	1973
17.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ. ए.बी. कीथ	मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली	1960
18.	संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास	डॉ. सूर्यकान्त	ऑरिएण्ड लॉगमैन लिमिटेड, नई दिल्ली	1972
19.	संस्कृतसाहित्य का समीक्षात्मक इतिहास	डॉ. कपिल देव द्विवेदी	रामनारायण लाल विजय कुमार इलाहाबाद	1985
20.	संस्कृत साहित्य बीसवीं शताब्दी	राधा बल्लभ त्रिपाठी	प्रतिभा प्रकाशन, शक्ति नगर, दिल्ली	1990
21.	शिवराज विजय अम्बिकादत्त व्यासः एक अध्ययन	कृष्ण कुमार	प्रकाश बुक डिपो बरेली	1971
22.	संस्कृत वाङ्मय का वृहत् इतिहास (सप्तम खण्ड)	आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय	उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ	वि.सं. 2056
23.	श्रीपाद शास्त्री हसूरकर व्यक्ति एवं अभिव्यक्ति	डॉ. केदारनारायण जोशी	प्रतिभा प्रकाशन (प्राच्य विद्या साहित्य के प्रकाशन एवं विक्रेता दिल्ली)	1995
24.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	1986

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
25	Fourteen Novels of Sanskrit	Dr. Pramod Bhartiya	Parimal Publications Delhi	1999
26	The History of History	James Shot Well	Collumbia University Press, New York	1950
27	The Problem of History and Historiograph	V.V. Joshi	Kitabistan, Allahabad	1946

कोश ग्रन्थ सूची

क्र. सं.	कोश ग्रन्थ	लेखक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1	संस्कृत शब्दार्थ—कौस्तुभः	द्वारिका प्रसाद शर्मा	इलाहाबाद	1977
2	संस्कृत साहित्य कोश	श्री कृष्ण सेमवाल	दिल्ली संस्कृत अकादमी	1996
3	संस्कृत हिन्दी कोश	वामन शिवराम आप्टे	मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली	1996
4	शब्द—कल्पद्रुम	राजा राधाकान्त देव	चौखम्बा संस्कृत सीरिज वाराणसी	1967

पत्र–पत्रिकायें

1. दूर्वा (त्रैमासिक) – भोपाल
2. विश्वसंस्कृतम् – होशियारपुर
3. शारदा – मुम्बई
4. स्वर मंगला – जयपुर
5. संविद् – मुम्बई
6. संस्कृत प्रतिभा – दिल्ली
7. संस्कृत विमर्श – दिल्ली
8. सरस्वती सुषमा – वाराणसी
9. अर्वाचीन संस्कृतम् – दिल्ली
10. शोध–प्रभा – दिल्ली